CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 06 (2019-20)

Maximum Marks: 80
Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-(12)**
   प्रसिद्ध दार्शनिक नीत्शे एक ऐसा देवता तलाश रहे थे, जो मनुष्य की पहुँच में हो। उसी की तरह नाच-गा सके। जीवन से भरपूर हो। हँसे-रोए, काम करे-कराए बिल्कुल आदमी की तरह। नीत्शे को ऐसा देवता नहीं मिला तो उसने कह दिया, "ईश्वर मर गया है।"
   लगता है कि नीत्शे को कृष्ण की जानकारी नहीं थी। वे नाचते, गाते हैं, काम करते हैं और योगी भी है-कर्मयोगी भी। काम करो, बाकी सब भूल जाओ-यह है उनका अनासक्त कर्म। यहाँ तक कि काम के फल की भी इच्छा मत करो-कर्मण्येवाधिकारस्ते।
   अजीब विरोधाभास है। काम करने का निराला ढंग है कि काम तो पूरे मन से करो, ईश्वर का आदेश समझकर करो पर उससे परे भी रहो। काम पूरा होते अनासक्त हो जाओ। यों कृष्ण जो भी करते हैं उसमें गजब की आसक्ति दिखाई देती। है-चाहे ग्वाले का काम हो, रसिक बिहारी का हो, सारथि का हो, उपदेष्टा या मार्गदर्शक का, वे मनोयोग से अपनी भूमिका निभाते दिखाई पड़ते हैं और अगले ही क्षण उससे अलग, जैसे कमल के पत्ते पर पड़ा पानी। जीवन का प्रत्येक पल पूरेपन से जीना और चिपकना नहीं, यही अनासक्ति है। उनमें कहीं अधूरापन दिखाई ही नहीं देता। पीछे मुड़ने का उन्हें अवकाश ही नहीं है। यह कृष्ण जैसा कर्मयोगी ही कर सकता है। वे विश्वरूप हैं, परंतु अहंकार का कहीं नाम तक नहीं। गाय चराने या रथ हाँकने का काम करने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं।

i. नीत्शे कौन थे? वे क्या तलाश रहे थे? (2)
ii. "ईश्वर मर गया है"-नीत्शे ने यह क्यों कहा होगा? (2)
iii. कृष्ण के व्यक्तित्व में 'विरोधाभास' क्यों लगता है? (2)
iv. आशय स्पष्ट कीजिए-"कर्मण्येवाधिकारस्ते ....।" (2)
v. कृष्ण की किन विविध भूमिकाओं का उल्लेख है। (2)
vi. कृष्ण के व्यक्तित्व से हम क्या सीख सकते हैं? (1)
vii. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1 × 4)**

खुल कर चलते डर लगता है
बातें करते डर लगता है
क्योंकि शहर बेहद छोटा है।
ऊँचे हैं, लेकिन खजूर से
मुँह हैं इसीलिए कहते हैं,
जहाँ बुराई फूले-पनपे
वहाँ तटस्थ बने रहते हैं,
नियम और सिद्धांत बहुत
दंगों से परिभाषित होते हैं-
जो कहने की बात नहीं है,
वही यहाँ दुहराई जाती,
जिनके उजले हाथ नहीं हैं
उनकी महिमा गायी जाती
यहाँ ज्ञान पर प्रतिभा पर
अवसर का अंकुश बहुत कड़ा है-
सब अपने धंधे में रत हैं
यहाँ न्याय की बात गलत है
क्योंकि शहर बेहद छोटा है।
बुद्धि यहाँ पानी भरती है,
सीधापन भूखों मरता है-
उसकी बड़ी प्रतिष्ठा है,
जो सारे काम गलत करता है।
यहाँ मान के नाप-तौल की,
इकाई कंचन है, धन है-
कोई सच के नहीं साथ है

यहाँ भलाई बुरी बात है। क्योंकि शहर बेहद छोटा है।

i. उस शहर के लोगों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?
ii. आशय स्पष्ट कीजिए-
"बुद्धि यहाँ पानी भरती है, सीधापन भूखों मरता है।"
iii. इस शहर में असामाजिक तत्व और धूर्त क्या-क्या प्राप्त करते हैं?
iv. "जिनके उजले हाथ नहीं है"-कथन में हाथ उजले न होने से कवि का क्या आशय है?

Section B

3. **परहित सरिस धर्म नहिं भाई** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

प्राकृतिक आपदाएँ विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

आज की बचत कल का सुख विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. निकट के शहर से आपके गाँव तक की सड़क का रख-रखाव संतोषजनक नहीं है। मुख्य अभियंता, लोक-निर्माण विभाग को एक पत्र लिखकर तुरंत कार्यवाही का अनुरोध कीजिए। समस्या के निदान के लिए एक सुझाव भी दीजिए।

OR

दूरदर्शन केंद्र निदेशक को प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता एवं उनके गिरते हुए स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

a. संवाददाता किसे कहते हैं?

b. संपादकीय का महत्त्व समझाइए।

c. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ किसे कहते हैं?

d. वायस ओवर क्या है?

e. पत्रकार किसे कहते हैं?

6. आदर्श ग्राम विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

धनोपार्जन के मूल्यहीन तरीके पर एक फीचर लिखिए।

OR

समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली क्या है?

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2 $\times$ 3 = 6)**

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भू जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी ने जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

i. 'जगजीवन का भार' लिए फिरने से कवि का क्या आशय है? ऐसे में भी वह क्या कर लेता है?
ii. 'स्नेह-सुरा' से कवि का क्या आशय है?
iii. आशय स्पष्ट कीजिए-
"जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते।"

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x3=6)

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों कहाँ जाई का करी?
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकियत,
साँकरे सबै पै, राम ! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।।

i. तुलसीदास ने अपने समय की किन-किन समस्याओं को उठाया है?
ii. तुलसी किससे कृपा की उम्मीद कर रहे हैं और क्यों?
iii. दरिद्रता की तुलना किससे की गई है और उससे बचाव का उपाय क्या है?

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)**

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं
कपास पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

i. प्रस्तुत काव्यांश की भाषा संबंधी दो विशेषताएँ बताइए।
ii. प्रस्तुत काव्यांश के दृश्य-सौंदर्य की चर्चा कीजिए।

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

i. काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए।
ii. काव्यांश के भाषिक सौंदर्य पर टिप्पणी लिखिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:
   a. **कविता के बहाने** कविता के कवि को क्या आशंका है और क्यों?
   b. शमशेर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।-पुष्टि कीजिए।
   c. फिराक गोरखपुरी की कविताओं के आधार पर बताइए क्या शायर भाग्यवादी है?

10. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)**

पानी की आशा पर जैसे सारा जीवन आकर टिक गया हो। बस एक बात मेरे समझ में नहीं आती थी कि जब चारों ओर पानी की इतनी कमी है तो लोग घर में इतनी कठिनाई से इकट्ठा करके रखा हुआ पानी बाल्टी भर-भरकर इन पर क्यों फेंकते हैं। कैसी निर्मम बर्बादी है पानी की। देश की कितनी क्षति होती है इस तरह के अंधविश्वासों से। कौन कहता है इन्हें इंद्र की सेना? अगर इंद्र महाराज से ये पानी दिलवा सकते हैं तो खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेते? क्यों मुहल्ले भर का पानी नष्ट करवाते घूमते हैं? नहीं यह सब पाखंड है। अंधविशवास है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण हम अंग्रेज़ों से पिछड़ गए और गुलाम बन गए।

i. लेखक को कौन-सी बात समझ में नहीं आती?
ii. देश को किस तरह के अंधविश्वास से क्षति होती हैं?
iii. कौन कहता है इन्हें इंद्र की सेना?- इस कथन का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नही समय रहते सावधान हो जाती? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत् के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य है। तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी-"धरा को प्रमान यही तुली जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!"

मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नही फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है। सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमे प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाने है।

दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते है कि जहाँ बने है, वही देर तक बने रहे तो काल-देवता की आँख बचा जाएँगे भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते। हो। जमे कि मरे।

i. शिरीष की किस विशेषता के कारण लेखक को यह सब लिखना पड़ता है?
ii. मूर्ख अपना स्थान क्यों नहीं छोड़ते हैं? उन्हें क्या समझना ज़रूरी है?
iii. किस सच्चाई को उजागर करने के लिए तुलसी को उधृत किया गया है?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)
   a. बाज़ार दर्शन के आधार पर **पैसे की व्यंग्य शक्ति** कथन को स्पष्ट कीजिए।
   b. **नमक** कहानी में हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में रहने वाले लोगों की भावनाओं, संवेदनाओं को उभारा गया है। वर्तमान संदर्भ में इन संवेदनाओं की स्थिति को तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।
   c. लछमिन को शहर क्यों जाना पड़ा?
   d. चार्ली चैप्लिन के बारे में लेखक ने क्या कहा है?
12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:
   a. **सिल्वर वैडिंग** कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के अंतर्द्वंद्व को स्पष्ट कीजिए।
   b. वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी (सिल्वर वेडिंग) से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं ?
   c. **जूझ** कहानी का नायक किन परिस्थितियों में अपनी पढ़ाई जारी रख पाता है? अगर उसकी जगह आप होते तो उन विषम परिस्थितियों में किस प्रकार अपने सपने को जीवित रख पाते?
   d. पुरातत्त्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि- "सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"
   e. लेखक ने मुअनजो-दड़ो शहर के टूटने या उजड़ने के बारे में क्या कल्पना की है?

CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 06 (2019-20)

Solution

Section A

1. i. नीत्शे एक प्रसिद्ध दार्शनिक थे। वे एक ऐसा देवता तलाश कर रहे थे, जो मनुष्य की पहुँच में हो और उसी की तरह नाच-गा सके और जो मनुष्य की तरह ही जीवनयापन करे।
   ii. "ईश्वर मर गया है" नीत्शे ने यह इसलिए कहा होगा क्योंकि उसे ऐसा देवता नहीं मिला जो जीवन से भरपूर हो। जो मनुष्य की तरह हँसे-रोए, काम करे और कराए।
   iii. कृष्ण के व्यक्तित्व में विरोधाभास लगता है क्योंकि वे नाचते गाते हैं, काम करते हैं। एक ओर वे योगी हैं, तो दूसरी ओर कर्मयोगी भी हैं।
   iv. 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' .... का आशय है कि काम करो बाकी सब भूल जाओ। यहाँ तक कि काम के फल की इच्छा भी मत करो।मनुष्य का अपना काम है बिना किसी फल की इच्छा के कर्म करते रहना।
   v. कृष्ण की विभिन्न भूमिकाओं का उल्लेख किया गया है; जैसे-कृष्ण ग्वाले का काम करते हैं, रसिक बिहारी का, सारथी का, उपदेष्टा या मार्गदर्शक आदि का।
   vi. कृष्ण के व्यक्तित्व से हम ये सीख सकते हैं कि जीवन के प्रत्येक पल को पूरेपन से जीना चाहिए, उससे चिपकना नहीं चाहिए।
   vii. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-"कृष्ण:योगी एवं कर्मयोगी"
2. i. उस शहर के लोगों की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ के लोग अत्याचार होते देखकर भी तटस्थ रहते हैं। यहाँ केवल धनी एवं भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों का सम्मान होता है। यहाँ बुद्धिमान एवं सीधे-सच्चे लोग भूखे मरते हैं।
   ii. प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि शहर में बुद्धिमानी और सीधेपन का सम्मान नहीं होता। ऐसे लोगों का शोषण होता है। बुद्धिजीवी श्रमिक का काम करते हैं। उनकी स्थिति अत्यंत सोचनीय रहती है, जबकि धूर्त एवं चालबाज़ों की चाँदी रहती है।
   iii. इस शहर में असामाजिक तत्त्व और धूर्त लोग धन और सम्मान प्राप्त करते हैं। असामाजिक एवं धनिक लोगों की ही महिमा गायी जाती है, न्याय उन्हीं के पक्ष में होता है और समाज में उन्हीं को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।
   iv. हाथ उजले न होने से कवि का आशय भ्रष्ट लोगों अर्थात् अनैतिक कार्य करने वाले लोगों से है।

Section B

3. **परहित सरिस धर्म नहिं भाई**

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-
"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

OR

प्राकृतिक आपदाएँ

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

OR

आज की बचत कल का सुख

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

4. सेवा में
मुख्य्य अभियंता,
लोक निर्माण विभाग,
दिल्ली।

15 अप्रैल, 2019

विषय - सड़कों के रख-रखाव हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं गोविन्द प्रसाद, बसई गाँव का निवासी हूँ। निकट के शहर से हमारे गाँव को जो सड़क जोड़ती है ,उसका अभी कुछ ही दिनों पूर्व लोक निर्माण विभाग की ओर से निर्माण करवाया गया था। सड़क का उचित रख-रखाव न करने के कारण सड़क पर दोनों ओर गंदगी फैली रहती है, लोग अपने घर का कूड़ा वहाँ डालने लगे हैं। इसके अतिरिक्त सड़क भी बीच-बीच में कई जगह से टूट गई है,और सड़क पर जगह-जगह गढ्ढ़े बन गए हैं, जिससे आने-जाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः महोदय मेरा आपसे अनुरोध है कि सड़क पर कूड़ा डालने वाले लोगों को चेतावनी देकर वहाँ पर कूड़ा न डालने का निर्देश दिया जाए और सड़क को पुनः निर्माण करके उसे उपयोग करने के लायक बनाया जाए।

आशा है कि आप मेरे इस पत्र द्वारा प्राप्त सूचना पर शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाएँगे।

धन्यवाद

भवदीय

गोविन्दप्रसाद

बसई गाँव

OR

सेक्टर 20, द्वारकापुरी,
दिल्ली।
17 अप्रैल, 2019
सेवा में,
निदेशक,
दूरदर्शन केंद्र,
संचार भवन, दिल्ली।
विषय- दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों के गिरते हुए स्तर के संबंध में।
महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान दिल्ली दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों के गिरते हुए स्तर की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। दूरदर्शन के कार्यक्रमों की गुणवत्ता में दिनोंदिन गिरावट आती जा रही है। धारावाहिकों में वही रोना-धोना, छल-कपट, हिंसा, अश्लीलता का बोलबाला, फिल्मों एवं गीतों की घटिया शब्दावली, हिंसा प्रधान फिल्में आदि ऐसी हैं, जिन्हें परिवार के साथ बैठकर देख पाना कठिन हो जाता है। दूरदर्शन पर शैक्षिक एवं स्वस्थ हास्य-व्यंग्य प्रधान कार्यक्रमों की कमी है। इन कार्यक्रमों से कुछ खास फायदे नहीं हैं, पर इनके दुष्प्रभाव बहुत हैं। कार्यक्रमों की गुणवत्ता में गिरावट के कारण दूरदर्शन के दर्शकों की संख्या में भी भारी गिरावट आई है और ये निरंतर जारी है।
अतः आपसे प्रार्थना है कि इस मामले में हस्तक्षेप कर कार्यक्रमों की गुणवत्ता को बनाए रखने तथा शैक्षिक एवं स्वस्थ मनोरंजन वाले कार्यक्रमों का प्रसारण करने की कृपा करें।
सधन्यवाद।
भवदीय
राहुल शर्मा

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. समाचारों को संकलित करने वाले को संवाददाता कहा जाता है।

   b. एक अच्छा संपादकीय किसी विषय या मुद्दे पर संपादक द्वारा प्रस्तुत उसके विचारों की सजग एवं ईमानदार प्रस्तुति है। संक्षिप्तता, विश्वसनीयता, तथ्यपरकता, निष्पक्षता एवं रोचकता एक अच्छे संपादकीय का महत्त्व है।

c. टेलीविजन पर जब कोई बड़ी ख़बर कम से कम शब्दों में केवल सूचना के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाई जाती है, तो वह फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ कहलाती है।

d. किसी गतिमान/चलायमान दृश्य के पीछे से आ रही आवाज को 'वायस ओवर' कहते हैं।

e. पत्रकार उस व्यक्ति को कहते हैं, जो समसामयिक घटनाओं, लोगों एवं मुद्दो आदि पर सूचना एकत्र करता है एवं उसे विभिन्न माध्यमों की मदद से जनता तक पहुँचाता है।

6. **आदर्श ग्राम**

अमर स्वतंत्रता सेनानी स्व. जयप्रकाश नारायण के जन्मदिवस पर 11 अक्टूबर, 2014 को हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'सांसद आदर्श गाँव योजना' की आधारशिला रखी। इस योजना के अंतर्गत गाँवों की विकास की बात की गई थी।
गाँवों को समर्पित इस योजना का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रत्येक सांसद को वर्ष 2019 तक तीन आदर्श गाँव बनाने होंगे। इस प्रकार यदि देश के 800 सांसद ऐसा करें तो वर्ष 2019 तक 2,500 गाँवों का विकास हो जाएगा। इस योजना के माध्यम से अधिक-से-अधिक गाँवों को विकसित किए जाने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री ने कहा था-"सांसद गाँव को तीर्थ की तरह बनाएँ, विधायक भी आदर्श गाँव बनाएँ। ऐसा माहौल बनाया जाए, जिससे गाँव वाले अपने गाँव पर गर्व करें।"
इस योजना के अंतर्गत आदर्श गाँव के रूप में विकसित किए जाने वाले गाँवों में सभी प्रकार की सुख-सुविधा तो उपलब्ध रहेगी ही, साथ-ही-साथ जुआ खेलने, नशा करने आदि दुर्गुणों पर भी प्रतिबंध रहेगा। इस प्रकार आदर्श गाँवों हेतु संसद के दोनों सदनों (लोकसभा व राज्यसभा) के सभी सांसदों को मार्च, 2019 तक तीन-तीन गाँवों को विकसित करने का दायित्व सौंपा गया है।
इस योजना के द्वितीय चरण में अर्थात् वर्ष 2019 के पश्चात् प्रत्येक सांसद को पुनः 5 और गाँवों को चुनकर उन्हें आदर्श गाँवो में परिवर्तित करना है। इस प्रकार चयन किए गए गाँवों को वर्ष 2024 तक शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण सहित अन्य क्षेत्रो में विकास के उच्च स्तर तक पहुँचाना इस योजना का लक्ष्य रखा गया है। साफ़-सफ़ाई, पठन-पाठन, महिलाओं के सम्मान आदि को भी इस योजना में महत्त्व दिया गया है। चयनित गाँवो के गरीब लोगो की स्थिति सुधारने हेतु सांसद निर्वाचन क्षेत्र फंड का उपयोग किया जाएगा। इस नियोजन प्रक्रिया में जिला कलेक्टर को भी सम्मिलित किया जाएगा।इस योजना का मूल उद्देश्य गाँवों को विकसित करके उसे शहरों के तुलना में लाना था, गाँवों में भी शहरों की तरह सुविधाएँ उपलब्ध कराना है।

OR

धनोपार्जन के मूल्यहीन तरीके

संसार में धनोपार्जन के अनेक मूल्यहीन तरीके प्रचलित हैं। अपहरण करना, किसी की हत्या की सुपारी लेना, रक्त बेचना शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग-किडनी आदि बेचना, ठगी करना आदि धनोपार्जन के ऐसे ही कुछ मूल्यहीन तरीके हैं। अनेक स्त्रियाँ

गर्भवती होने का ढोंग कर लोगों से भीख माँगती हैं। कुछ लोग जागरण के नाम पर चंदा एकत्रित करते हैं और लोगों को मूर्ख बनाते हैं। कई लोग जेब काटते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोग दुकानों तथा मकानो में चोरी करते हैं। कुछ लोग सोने के नाम पर पीतल बेचकर या सामान्य चमकीले पत्थर को नागमणि कहकर बेचते हैं।

अनेक लोगों ने अवैध और मूल्यहीन तरीकों से धन कमाना अपना पेशा ही बना लेते हैं।ऐसे लोग अन्य लोगों को धोखा देकर लाखों रुपये अर्जित कर लेते हैं।ये लोग अपने अवैध धनोपार्जन के अनेक तरीकों का ईजाद करते हैं। तथाकथित निर्मल बाबा, संत रामपाल, आसाराम आदि की तरह कुछ लोग धार्मिकता का ढोंग कर करोड़ों रुपए कमाते हैं। कुछ लोग धार्मिक प्रवचन देकर लोगो से लाखों रुपये ऐंठते हैं।

कुछ निर्धन लोग अपना रक्त बेचकर धन प्राप्त करते हैं, तो कुछ लोग अंधे होने का ढोंग कर भीख माँगकर प्रति मास हजारों रुपये अर्जित करते है। इस प्रकार हमारे समाज में अनेक लोग मूल्यहीन तरीकों से धन अर्जित करते हैं। समाज को सबसे अधिक खतरा तो उन सफ़ेदपोश लोगों से है, जो अपने ईमान को गिरवी रखकर देश व समाज को लूट रहे हैं। ऐसे लोग कई बार सी.बी.आई. अधिकारी या पुलिस के उच्चाधिकारी होने का ढोंग करते है। कई बार ये नकली आयकर अधिकारी बनकर भी लोगों से ठगी करते हैं तथा पर्याप्त धन अर्जित करते हैं। समाज में अनेक लोग साधु, तांत्रिक आदि बनकर पर्याप्त धन अर्जित करते हैं। निर्मल बाबा जैसे व्यक्ति लोगों को मूर्ख बनाकर करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष अर्जित कर लेते हैं। इस प्रकार अनेक लोग मूल्यहीन तरीकों से धन अर्जित करते है।

OR

उल्टा पिरामिड शैली समाचार लेखन की सर्व प्रचलित शैली है, जो कथात्मक शैली के विपरीत क्रम की शैली है। इस शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले व कम महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ बाद में प्रस्तुत की जाती हैं। कथात्मक शैली में महत्त्वपूर्ण तथ्य (क्लाइमेक्स) मध्य या अन्त से पूर्व रखे जाते हैं जबकि उल्टा पिरामड शैली में प्रारम्भ ही चरमोत्कर्ष होता है। इस शैली में लिखित समाचार के तीन भाग होते हैं-इण्ट्रो (मुखड़ा), बॉडी व समापन।

Section C

7. i. 'जगजीवन के भार' से कवि का आशय है कि उसका जीवन तमाम सांसारिक भार, विषमताओं एव अन्य समस्याओं से ग्रस्त है। फिर भी वह सबको स्नेह देता है अर्थात् उसका जीवन प्रेम की ऊर्जा से संचालित है।
   ii. 'स्नेह-सुरा' से कवि का आशय प्रेम रूपी मस्ती से है। कवि कहता है। कि संसार उसके विषय में चाहे कुछ भी कहे फिर भी वह प्रेम -प्याला पीकर अपने में मग्न रहता है अर्थात् वह सदैव प्रेम की मस्ती में झूमता रहता है।
   iii. "जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते" पक्ति से आशय यह है कि संसार के लोग उन्ही लोगों का सम्मान करते है, जो उनकी प्रशसा करते है अर्थात् ससार के लोगो का प्रेम उनकी स्वार्थ पूर्ति पर ही आधारित होता है। जो लोग उसके आगे-पीछे घूमते रहते हैं,वह सिर्फ उन्हीं की परवाह करता है।

OR

i. तुलसीदास ने अपने समय की अकाल, गरीबी, बेरोजगारी, व्यापार की हानि एवं सामाजिक मूल्य-हीनता जैसी समस्याओं को उठाया है।
ii. तुलसी अपने आराध्य देव प्रभु श्रीराम से कृपा की उम्मीद कर रहे हैं क्योंकि उनकी कृपा से ही कष्टों से निवारण हो

सकेगा।

iii. दरिद्रता की तुलना रावण से की गई है और राम की कृपा से ही उससे बचा जा सकता है।

8. i. इस काव्यांश मे कवि ने साहित्यिक खड़ी बोली का काव्य-भाषा के सुंदर रूप में प्रयोग किया है, जिसमें तत्सम, तदभव एवं उर्दू शब्दो की प्रमुखता है। काव्यांश की भाषा मुख्य रूप से बिंब प्रधान है, जिसमें दृश्य, श्रव्य बिंबों की प्रचुरता है। कवयांश में मानवीकरण का भी प्रयोग है।

ii. काव्यांश में खेलते हुए बेसुध दौड़ते बच्चे, आवाजे करते, डाल की तरह शरीर को लहराते, उड़ती पतंगों को देखते, उनकी डोरियों को थामे हुए विभिन्न दृश्य बिंबो के द्वारा वर्णित हैं। पेंग भरते हुए बच्चों का चले आना, झूले के दृश्य बिंब के सौन्दर्य को पाठक के सम्मुख साकार कर देता है। दिशाओं का मृदंग की तरह बजना श्रव्य बिम्ब का प्रयोग है।

OR

i. काव्यांश में प्रयुक्त ‘कल्पना के रसायनों' पद में ‘कल्पना' एवं 'रसायन' के बीच एकात्मकता स्थापित होने के कारण रूपक अलंकार मौजूद है। इसी प्रकार, ‘शब्द के अंकुर' पद में भी रूपक अलंकार प्रयुक्त हुआ है। यहाँ 'शब्द' एवं 'अंकुर' के बीच एकात्मकता स्थापित की गई है। इसके अतिरिक्त, 'गल गया' पद में 'ग' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार का सौंदर्य उत्पन्न हुआ है। 'बीज' में श्लेष अलंकार उपस्थित है, क्योकि बीज का अर्थ ‘मनोभाव' तथा खेती में प्रयुक्त होने वाला 'बीज' दोनों ही है।

ii. प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने खेती के कार्यों के रूपकों के जरिए अपने रचना-कर्म को व्याख्यायित किया है। समग्र काव्यांश में सांग रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है। कविता छंद मुक्त है एवं संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया गया है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. कवि को कविता के अस्तित्व या भविष्य के बारे में संदेह है। उसे आशंका है कि औद्योगीकरण के कारण मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है। उसके पास भावनाएँ व्यक्त करने या सुनने का समय नहीं है। प्रगति की अंधी दौड़ से मानव की कोमल भावनाएं समाप्त होती जा रही हैं। वह मशीन बनता जा रहा है, कविता का भाव समझने का वक्त ही उसके पास नहीं है, मनुष्य ने स्वयं को सीमित कर लिया है जबकि कविता के लिए मुखर होने की आवश्यकता होती है अतः कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

b. कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। कवि दूसरी उपमा स्लेट पर लाल खड़िया मलने से देता है। ये सारे उपमान ग्रामीण परिवेश से संबंधित हैं। आकाश के नीलेपन में जब सूर्य प्रकट होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है। ये सभी दृश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनमें गतिशीलता है।

c. शायर बिलकुल भी भाग्यवादी नहीं है। उसे अपने भाग्य पर बिलकुल भरोसा नहीं। वह तो कहता है कि मैं और मेरी

किस्मत दोनों मिलकर रोते हैं। वह मुझ पर रोती है और मैं उस पर रो लेता हूँ। दोनों परस्पर विरोधी हैं। इसलिए कह सकते हैं कि शायर भाग्यवादी नहीं कर्मवादी है। भाग्य की अपेक्षा उसे अपने कर्म पर विश्वास है।

10. i. लेखक को यह समझ में नहीं आता कि जब पानी की इतनी कमी है तो लोग कठिनाई से इकट्ठे किए हुए पानी को बाल्टी भर-भरकर इंदर सेना पर क्यों फेंकते हैं।

ii. वर्षा न होने पर जब पानी की कमी हो जाती है। तब ग्रामीण बच्चों की मण्डली पर ऐसे पानी फेंक कर गलियों में पानी बर्बाद करते हैं उनके ऐसे अंधविश्वासों से देश की क्षति होती है।

iii. इस कथन से लेखक ने इंदर सेना और मेंढ़क-मण्डली पर व्यंग्य किया है। ये लोग पानी की बर्बादी करते हैं तथा पाखंड फैलाते हैं। यदि ये इंद्र से औरों को पानी दिलवा सकते हैं तो अपने लिए क्यों नहीं माँग लेते।

OR

i. शिरीष के वृक्ष पर जमे रहने वाले पुराने फलों को देखकर लेखक को यह सब लिखना पड़ा। शिरीष के पुराने मजबूत फलों को देखकर लेखक को अधिकार-लिप्सा की याद आती है। पुराने फलों के झड़ने का समय आ गया है, लेकिन वे अपने स्थान पर डटे रहते हैं। लेखक समाज के सभी क्षेत्रों में फैली इस प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना चाहता है।

ii. लेखक का मानना है कि जो लोग मूर्ख हैं, उन्हें यह लगता है कि अपनी जगह पर देर तक जमे रहने पर वे काल देवता की नज़र से बच जाएँगे। यही सोचकर वे अपना स्थान नहीं छोड़ते हैं। वास्तव में, ऐसी समझ रखने वालों को यह समझना जरूरी है कि एक ही जगह पर ज्यादा देर तक जमे रहने पर ही बचना मुश्किल है। अतः हमेशा अपना स्थान बदलते रहना चाहिए, अपनी गतिशीलता बनाए रखनी चाहिए। तभी काल देवता के कोड़े की मार से बचा जा सकता है।

iii. तुलसीदास जी ने जीवन के बारे में कहा था कि जो फलता है, वह झड़ता भी है- "धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना" कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक जीव की मृत्यु सुनिश्चित है। इससे किसी भी स्थिति में बचा नहीं जा सकता है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. पैसे में व्यंग्यशक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है। परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

b. **नमक** कहानी में हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में रहने वालों की भावनाओं, संवेदनाओं को उभारा गया है। आज के संदर्भ में स्थिति में काफी परिवर्तन आ चुका है विभाजन के समय वाली पीढ़ी अब समाप्त हो चुकी है अब उसका स्थान उस पीढ़ी ने ले लिया है जिनके जेहन में विभाजन की कड़वी यादें न के बराबर है इसलिए अब भावनात्मक तौर पर दोनों देशों में दुराव पहले की तुलना में घट गया है परन्तु वर्तमान में देश के राजनैतिक, सामाजिक,सांस्कृतिक आदि के कारण अभी दोनों देशों के बीच तनाव व्याप्त है। निजी स्वार्थों की आड़ में लोग अपना मतलब साध रहे हैं और निर्दोषों को उसका दण्ड भुगतना पड़ता है, इसलिए आज संबंधों में मधुरता लाने के लिए सार्थक प्रयासों की आवश्यकता हैं।

c. लछमिन के बड़े दामाद की मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर परिवारवालों ने जिठौत के साले को जबरदस्ती विधवा लड़की का पति बनवा दिया। पारिवारिक द्वेष बढ़ने से खेती-बाड़ी चौपट हो गई। स्थिति यहाँ तक आ गई कि लगान भी नहीं चुकाया गया। जब जमींदार ने लगान न पहुँचाने पर भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा तो उसके स्वाभिमानी हृदय को गहरा आघात लगा। यह उसकी कर्मठता के लिए सबसे बड़ा कलंक बन गया। इस अपमान के कारण वह दूसरे दिन कमाई के विचार से शहर आ गई।

d. लेखक कहता है कि चार्ली पर कई फ़िल्म समीक्षकों ने नहीं फ़िल्म कला के उस्तादों और मानविकी के विद्वानों ने सिर धुने हैं और उन्हें नेति-नेति कहते हुए यह भी मानना पड़ता है कि चार्ली पर कुछ नया लिखना कठिन होता जा रहा है। दरअसल सिद्धांत कला को जन्म नहीं देते, कला स्वयं अपने सिद्धांत या तो लेकर आती है या बाद में उन्हें गढ़ना पड़ता हैं। करोड़ों लोग चार्ली को देखकर अपने पेट दुखा लेते हैं। वे स्वाभाविक रूप से हँसने को मजबूर हो जाते हैं।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं जो आज की आधुनिक पीढ़ी से सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे हैं। वे आधुनिक व प्राचीनता के बीच समन्वय स्थापित नहीं कर पाते। नए विचारों को संशय की दृष्टि से देखते हैं। इस तरह वे ऑफिस व घर दोनों से बेगाने हो जाते हैं। वे मंदिर जाते हैं लेकिन वहां भी उनका मन नहीं लग पता है। रिश्तेदारी निभाना चाहते हैं, परंतु अपना मकान खरीदना नहीं चाहते। वे अच्छे मकान में जाने को तैयार नहीं होते। वे बच्चों की प्रगति से प्रसन्न होते हैं, परंतु उनके कुछ निर्णयों से असहमत हैं। वे आधुनिक तो बनना चाहते हैं लेकिन आधुनिक जीवन शैली एवं आधुनिक तौर तरीकों से बचना चाहते हैं। जैसे वे सिल्वर वैडिंग के आयोजन से भी बचना चाहते हैं। इस तरह वो पूरी तरह से अंतर्द्वंद्व में जी रहे हैं।

b. इस पाठ के माध्यम से पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण किया गया है। आधुनिकता के दौर में, यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं। उनका उसूलपसंद होना दफ्तर एवम घर के लोगों के लिए सिरदर्द बन गया था। यशोधर संस्कारों से जुड़ना चाहते हैं और संयुक्त परिवार की संवेदनाओं को अनुभव करते हैं जबकि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं। वे पुरानी मान्यताओं को नहीं मानते हैं। इन सब वजहों से उनके और उनके परिवार के बीच हमेशा मतभेद बना रहता है।
अतः मेरे मत से पुरानी-पीढ़ी को कुछ आधुनिक होना पड़ेगा और नई-पीढ़ी को भी पुरानी परंपराओं और मान्यताओं का ख्याल रखना होगा,ये तभी संभव है जब दोनों पक्ष एक दूसरे का सम्मान करेंगे एवं सुख-सुविधा का ख्याल रखेंगे।

c. **जूझ** कहानी के नायक के सामने संकट था। उसके पिता के लिए खेती ही सब कुछ था। शिक्षा को वह निरर्थक मानते थे। उसने लेखक का स्कूल जाना भी बंद करवा दिया था क्योंकि वे खेती व पशु चराने का काम उससे करवाना चाहते थे। लेखक व उसकी माँ पढ़ाई के बारे में उससे बात करते डरते थे। उन्होंने दत्ताराव के जरिए अपनी बात मनवाई। पिता ने खेती के काम करने की शर्त पर स्कूल भेजने की मंजूरी दी। स्कूल में लेखक अपनी उम्र के हिसाब से छोटी कक्षा में था। शरारती बच्चे उसका मजाक उड़ाते थे। पैसे की कमी के कारण वर्दी आदि की भी दिक्कत थी। लेखक ने अपने परिश्रम से अपना सम्मान अर्जित किया और कविता व गणित में अव्वल स्थान प्राप्त किया। अगर मैं लेखक की

जगह होता तो मैं भी प्रयास करके अपने पिता को अपनी बात मनवाने के लिए सहमत करवाता और मेहनत, संघर्ष व लगन से अपना लक्ष्य हासिल करता।

d. हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं, महंतों की समाधियाँ। यहाँ के मूर्तिशिल्प छोटे हैं और औज़ार भी। मुअनजो-दड़ो 'नरेश' के सिर पर रखे मुकुट से छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। यहाँ आम आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है। नगरयोजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि में एकरूपता देखने मिलती है। शक्ति के प्रतीक के रूप में सैन्य हथियार के अवशेष कहीं नहीं मिलते, ऐसे कोई भी चिह्न नहीं मिले जिससे पता चले कि वे असभ्य या हथियार प्रेमी थे, इन आधारों पर विद्वान यह मानते है कि 'सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा स्वयं अनुशासित सभ्यता थी।'

e. लेखक का मानना है कि सिंधु घाटी सभ्यता में कहीं भी नहरों के प्रमाण नहीं मिले हैं। लोग कुओं के जल का प्रयोग करते थे। वर्षा भी पर्याप्त होती थी क्योंकि यहाँ खेती के भी खूब प्रमाण मिले हैं। लेखक का अनुमान है कि धीरे-धीरे वर्षा कम होने लगी होगी तथा यहाँ रेगिस्तान बनना प्रारंभ हुआ होगा। इसके साथ ही भूमिगत जल के अत्यधिक प्रयोग से पानी की कमी होनी शुरू हो गई होगी।
जल की निकासी, सामूहिक स्नानागार आदि के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहाँ के लोग जल का प्रचुर मात्रा में उपयोग करते होंगे। प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण जल की कमी हो गई और सिंधु घाटी सभ्यता उजड़ गई।